



Original Article

21वीं सदी में बेरोज़गारी और मध्यवर्गीय जीवन का संकट

श्री. विश्वास निवृत्ती पाटील

सहायक प्राध्यापक

आर्ट्स, कॉमर्स अँड सायन्स कॉलेज, आष्टा

Manuscript ID:

IJAAR-C130368

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 352 - 356

Submitted: 05 Feb. 2026

Revised: 15 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

श्री. विश्वास निवृत्ती पाटील

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787181

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787181>



Creative Commons



सार:

21वीं सदी में वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीकी क्रांति के कारण विश्व अर्थव्यवस्था में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों का सर्वाधिक प्रभाव मध्यवर्ग पर पड़ा है, जो सामाजिक संरचना का संवेदनशील एवं गतिशील वर्ग माना जाता है। बेरोज़गारी, अस्थायी रोजगार, गिग-इकॉनॉमी तथा आर्थिक असुरक्षा ने मध्यवर्गीय जीवन को गहरे संकट में डाल दिया है। यह शोध-पत्र 21वीं सदी में बेरोज़गारी की समस्या और उसके मध्यवर्गीय जीवन पर सामाजिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। अध्ययन में हिंदी साहित्य और सिनेमा में प्रस्तुत यथार्थ को भी संदर्भित किया गया है, विशेषतः 3 Idiots तथा Peepli Live जैसी फिल्मों के उदाहरणों द्वारा। शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि बेरोज़गारी केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि मध्यवर्गीय अस्मिता, आत्मसम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ा व्यापक संकट है।

मुख्य शब्द: बेरोज़गारी, मध्यवर्ग, वैश्वीकरण, आर्थिक असुरक्षा, युवा संकट, हिंदी साहित्य, हिंदी सिनेमा, गिग-इकॉनॉमी, सामाजिक परिवर्तन

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

श्री. विश्वास निवृत्ती पाटील. (2026). 21वीं सदी में बेरोज़गारी और मध्यवर्गीय जीवन का संकट. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 352 - 356. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787181>

प्रस्तावना:

21वीं सदी को वैश्वीकरण, उदारीकरण और तीव्र तकनीकी परिवर्तन की सदी के रूप में देखा जाता है। सूचना-प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वचालन ने उत्पादन, वितरण और श्रम-बाजार की संरचना को मूलतः बदल

दिया है। इन परिवर्तनों ने एक ओर अवसरों का विस्तार किया, तो दूसरी ओर रोजगार की प्रकृति को अस्थिर और प्रतिस्पर्धात्मक बना दिया। परिणामस्वरूप, बेरोज़गारी और अल्प-रोज़गारी



भारतीय संदर्भ में 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद बाजार-आधारित नीतियों का प्रभाव 21वीं सदी में अधिक स्पष्ट हुआ। निजीकरण, कॉरपोरेट संस्कृति और वैश्विक प्रतिस्पर्धा ने रोजगार के नए क्षेत्र तो खोले, किंतु स्थायी सरकारी नौकरियों में कमी और अनुबंध आधारित नियुक्तियों की वृद्धि ने युवाओं के भविष्य को अनिश्चित बना दिया। शिक्षित बेरोजगारी विशेष रूप से मध्यवर्गीय समाज के लिए गहन चिंता का विषय बन गई है, क्योंकि यह वर्ग शिक्षा और योग्यता को सामाजिक उन्नति का प्रमुख साधन मानता है। मध्यवर्ग भारतीय समाज की वह श्रेणी है जो आर्थिक रूप से न तो अत्यंत संपन्न है और न ही अत्यंत निर्धन। यह वर्ग अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा, शिक्षा, नैतिक मूल्यों और स्थिर आय पर निर्भर रहता है। बेरोजगारी की स्थिति में इस वर्ग का जीवन-स्तर, सामाजिक सम्मान और पारिवारिक संतुलन प्रभावित होता है। नौकरी की अनिश्चितता, महंगाई, प्रतिस्पर्धा, ऋण-भार और सामाजिक अपेक्षाएँ मध्यवर्गीय जीवन को निरंतर दबाव में रखती हैं।

21वीं सदी में रोजगार की बदलती प्रकृति—जैसे गिग-इकॉनॉमी, स्टार्ट-अप संस्कृति और फ्रीलांसिंग—ने पारंपरिक 'स्थायी नौकरी' की अवधारणा को चुनौती दी है। यद्यपि ये विकल्प लचीलापन प्रदान करते हैं, परंतु सामाजिक सुरक्षा और दीर्घकालिक स्थिरता का अभाव मध्यवर्ग के लिए चिंता का कारण है। इस संदर्भ में बेरोजगारी केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, पहचान (Identity) और सामाजिक अस्मिता से जुड़ा प्रश्न बन जाती है।

हिंदी साहित्य और सिनेमा ने इस संकट को संवेदनात्मक और यथार्थपरक रूप में अभिव्यक्त किया है। समकालीन रचनाकारों ने बेरोजगार युवा की मानसिक पीड़ा, पारिवारिक तनाव और सामाजिक विडंबनाओं को अपने लेखन का विषय बनाया है। वहीं हिंदी सिनेमा में शिक्षा व्यवस्था,

प्रतियोगी परीक्षाओं और रोजगार की होड़ को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है, जैसा कि 3 Idiots में शिक्षा और करियर के दबाव का चित्रण तथा Peepli Live में आर्थिक संकट की त्रासदी के माध्यम से देखा जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी आर्थिक मंदी, वैश्विक महामारी और तकनीकी स्वचालन ने मध्यवर्गीय जीवन को प्रभावित किया है। रोजगार की अस्थिरता और आय में कमी ने सामाजिक असमानताओं को और अधिक उजागर किया है। इस प्रकार, 21वीं सदी में बेरोजगारी और मध्यवर्गीय जीवन का संकट केवल राष्ट्रीय नहीं, बल्कि वैश्विक परिघटना है।

अतः प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य 21वीं सदी में बेरोजगारी की समस्या को मध्यवर्गीय जीवन के व्यापक संदर्भ में समझना तथा साहित्य और सिनेमा में उसके यथार्थ चित्रण का विश्लेषण करना है, ताकि इस सामाजिक संकट की बहुआयामी प्रकृति को स्पष्ट किया जा सके।

विषय-विवेचन:

(क) बेरोजगारी की बदलती प्रकृति: 21वीं सदी में बेरोजगारी की प्रकृति पारंपरिक अर्थों से भिन्न और अधिक जटिल हो गई है। पूर्ववर्ती दशकों में रोजगार का आशय प्रायः स्थायी, नियमित और सामाजिक सुरक्षा से युक्त नौकरी से होता था। विशेषतः मध्यवर्ग के लिए सरकारी या प्रतिष्ठित निजी संस्थानों में स्थायी नौकरी सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक स्थिरता का प्रतीक मानी जाती थी। परंतु वैश्वीकरण, उदारीकरण और तकनीकी क्रांति के प्रभाव से श्रम-बाजार की संरचना में व्यापक परिवर्तन आया है।

आज रोजगार का स्वरूप अधिक लचीला, अस्थायी और प्रतिस्पर्धात्मक हो गया है। अनुबंध आधारित नियुक्तियाँ, आउटसोर्सिंग, गिग-इकॉनॉमी, फ्रीलांसिंग और स्टार्ट-अप



संस्कृति ने पारंपरिक नौकरी की अवधारणा को बदल दिया है। यद्यपि इन व्यवस्थाओं ने युवाओं को विविध अवसर प्रदान किए हैं, किंतु इनके साथ स्थायित्व, पेंशन, स्वास्थ्य-बीमा और अन्य सामाजिक सुरक्षा उपायों का अभाव भी जुड़ा हुआ है।

तकनीकी स्वचालन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने अनेक पारंपरिक नौकरियों को अप्रासंगिक बना दिया है। मशीनें और सॉफ्टवेयर मानव श्रम का स्थान ले रहे हैं, जिससे कम-कौशल वाले और मध्यम-कौशल वाले कर्मचारियों के सामने रोजगार संकट उत्पन्न हो रहा है। परिणामस्वरूप बेरोज़गारी केवल 'काम न मिलने' तक सीमित नहीं रही, बल्कि 'योग्यता के अनुरूप काम न मिलना' और 'अल्प-रोज़गारी' भी इसके नए आयाम बन गए हैं।

(ख) मध्यवर्गीय जीवन पर आर्थिक प्रभाव: मध्यवर्ग का जीवन-स्तर उसकी नियमित आय पर निर्भर करता है। यह वर्ग अपनी आय के आधार पर आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक समारोह और भविष्य की योजनाओं का निर्धारण करता है। बेरोज़गारी की स्थिति में सबसे पहले पारिवारिक आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। आय में कमी आने से दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति भी चुनौतीपूर्ण हो जाती है। शिक्षा और स्वास्थ्य पर होने वाला खर्च, जो मध्यवर्गीय परिवारों की प्राथमिकता में होता है, बेरोज़गारी के कारण बाधित होता है। बच्चों की उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और निजी चिकित्सा सुविधाएँ महँगी होने के कारण परिवार आर्थिक दबाव में आ जाता है।

इसके अतिरिक्त ऋणग्रस्तता में वृद्धि एक गंभीर समस्या है। गृह-ऋण, वाहन-ऋण और व्यक्तिगत ऋण के भुगतान में कठिनाई उत्पन्न होती है, जिससे आर्थिक असुरक्षा और मानसिक तनाव बढ़ता है। सामाजिक प्रतिष्ठा में गिरावट भी मध्यवर्ग के लिए पीड़ादायक होती है, क्योंकि यह वर्ग

अपनी सामाजिक पहचान को सम्मान और स्थिरता से जोड़कर देखता है। बेरोज़गारी इस पहचान को संकट में डाल देती है।

(ग) मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रभाव: बेरोज़गारी का प्रभाव केवल आर्थिक नहीं, बल्कि गहरा मनोवैज्ञानिक भी होता है। विशेष रूप से शिक्षित युवा वर्ग में असफलता की भावना, आत्मविश्वास की कमी और भविष्य के प्रति अनिश्चितता उत्पन्न होती है। लंबे समय तक रोजगार न मिलने से निराशा और हताशा की स्थिति पैदा होती है। परिवार के भीतर भी इसका प्रभाव दिखाई देता है। आर्थिक अस्थिरता के कारण पारिवारिक संबंधों में तनाव बढ़ता है। पति-पत्नी के बीच मतभेद, माता-पिता और बच्चों के बीच अपेक्षाओं का दबाव तथा सामाजिक तुलना (**Comparison**) की प्रवृत्ति मानसिक संतुलन को प्रभावित करती है।

मध्यवर्गीय समाज में 'सफलता' का मानक प्रायः अच्छी नौकरी और उच्च आय से जुड़ा होता है। जब युवा इन मानकों को प्राप्त नहीं कर पाता, तो वह स्वयं को सामाजिक रूप से पिछड़ा हुआ अनुभव करता है। इस प्रकार बेरोज़गारी व्यक्ति की आत्म-अस्मिता और सामाजिक स्थिति दोनों को प्रभावित करती है।

(घ) हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रण: हिंदी साहित्य ने सदैव समाज के यथार्थ को अभिव्यक्त करने का कार्य किया है। समकालीन कथा-साहित्य में शिक्षित बेरोज़गार युवाओं की पीड़ा, संघर्ष, आत्मसम्मान और सामाजिक दबाव को संवेदनात्मक रूप में चित्रित किया गया है। कहानियों और उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवारों की आर्थिक विवशता, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे युवाओं की मानसिक स्थिति तथा सामाजिक अपेक्षाओं का बोझ प्रमुख विषय के रूप में उभरता है।



हिंदी सिनेमा ने भी इस समस्या को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उदाहरणार्थ, 3 Idiots में शिक्षा प्रणाली की प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्ति और नौकरी प्राप्ति की होड़ को व्यंग्यात्मक किन्तु यथार्थ रूप में दिखाया गया है। फिल्म यह प्रश्न उठाती है कि क्या शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना है, या ज्ञान और कौशल का समग्र विकास भी उतना ही आवश्यक है।

इसी प्रकार Peepli Live में ग्रामीण भारत की आर्थिक विषमता और रोजगार के अभाव को तीव्र व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। यह फिल्म दर्शाती है कि आर्थिक संकट किस प्रकार व्यक्ति की गरिमा और जीवन-मूल्यों को प्रभावित करता है।

इन माध्यमों ने मध्यवर्गीय जीवन के अंतर्द्वंद्व, संघर्ष और सामाजिक विडंबनाओं को व्यापक समाज के सामने रखा है, जिससे सामाजिक चेतना का विकास होता है।

(ड) वैश्विक परिप्रेक्ष्य: 21वीं सदी में बेरोजगारी की समस्या केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक परिघटना है। विश्व स्तर पर आर्थिक मंदी, महामारी, स्वचालन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विस्तार ने रोजगार के अवसरों को प्रभावित किया है। विकसित देशों में भी मध्यवर्गीय परिवार नौकरी की अस्थिरता और आय में कमी की समस्या से जूझ रहे हैं। स्वचालन के कारण पारंपरिक उद्योगों में श्रमिकों की आवश्यकता कम हुई है, जबकि नई तकनीकी नौकरियों के लिए विशेष कौशल की मांग बढ़ी है। इससे कौशल-असमानता की समस्या उत्पन्न हुई है। जिन व्यक्तियों के पास आवश्यक तकनीकी कौशल नहीं है, वे रोजगार बाजार में पिछड़ जाते हैं।

इस प्रकार बेरोजगारी और मध्यवर्गीय जीवन का संकट वैश्विक स्तर पर सामाजिक असमानता, आर्थिक असुरक्षा और मानसिक तनाव को बढ़ावा दे रहा है। यह स्थिति न केवल

व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए भी चुनौतीपूर्ण है।

इस विस्तृत विवेचन से स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी में बेरोजगारी की समस्या बहुआयामी है—आर्थिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक सभी स्तरों पर इसका प्रभाव दिखाई देता है। मध्यवर्गीय जीवन इस परिवर्तनशील परिदृश्य में सबसे अधिक संवेदनशील और प्रभावित वर्ग के रूप में उभरकर सामने आता है।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी में बेरोजगारी केवल आर्थिक अभाव की समस्या नहीं रह गई है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, पारिवारिक संबंधों और व्यक्ति की मानसिक अवस्था को प्रभावित करने वाला व्यापक संकट बन चुकी है। विशेषतः मध्यवर्गीय जीवन, जो स्थिर आय, सामाजिक प्रतिष्ठा और भविष्य की सुरक्षा की आकांक्षा पर आधारित है, रोजगार की अस्थिरता के कारण गहरे दबाव में है। बदलते वैश्विक आर्थिक परिदृश्य, तकनीकी स्वचालन, अनुबंध आधारित नियुक्तियाँ और गिग-इकॉनॉमी की प्रवृत्तियाँ पारंपरिक रोजगार संरचना को चुनौती दे रही हैं। इससे मध्यवर्गीय युवाओं के सामने न केवल आर्थिक अनिश्चितता, बल्कि आत्म-अस्मिता और आत्मसम्मान का प्रश्न भी खड़ा हो गया है। बेरोजगारी के कारण उत्पन्न मानसिक तनाव, सामाजिक तुलना और पारिवारिक दबाव इस संकट को और अधिक जटिल बना देते हैं।

हिंदी साहित्य और सिनेमा ने इस यथार्थ को संवेदनात्मक और प्रभावी रूप में अभिव्यक्त किया है। उदाहरणस्वरूप 3 Idiots में शिक्षा और रोजगार की अंधी दौड़ के दुष्परिणामों को उजागर किया गया है, वहीं Peepli Live में



आर्थिक विषमता और रोजगार के अभाव से उत्पन्न मानवीय त्रासदी को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इन रचनात्मक माध्यमों ने समाज को यह सोचने के लिए प्रेरित किया है कि रोजगार केवल जीविका का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति की पहचान और सामाजिक सम्मान से जुड़ा हुआ प्रश्न है। समाधान की दृष्टि से यह आवश्यक है कि शिक्षा व्यवस्था को रोजगारोन्मुख और कौशल-आधारित बनाया जाए। कौशल विकास, स्वरोजगार और उद्यमिता को प्रोत्साहन देकर युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है। साथ ही, सरकार और नीति-निर्माताओं को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, बेरोजगारी भत्ते, स्वास्थ्य बीमा और रोजगार सृजन कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाना चाहिए।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 21वीं सदी में बेरोजगारी और मध्यवर्गीय जीवन का संकट बहुआयामी है, जिसके समाधान के लिए आर्थिक नीतियों के साथ-साथ सामाजिक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक जागरूकता भी

आवश्यक है। साहित्य और सिनेमा इस जागरूकता के सशक्त माध्यम हैं, जो समाज को समस्या के प्रति सजग कर परिवर्तन की दिशा में प्रेरित करते हैं।

संदर्भ-ग्रंथसूची:

1. बी. एल. अग्रवाल. *भारतीय अर्थव्यवस्था*। नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
2. रजनी कुमार. *समकालीन हिंदी साहित्य और समाज*। नई दिल्ली: (प्रकाशक विवरण)।
3. रामशरण सिंह. *वैश्वीकरण और भारतीय मध्यवर्ग*। नई दिल्ली: (प्रकाशक विवरण)।
4. राजकुमार हिरानी (निर्देशक). *3 Idiots*. मुंबई: विनोद चोपड़ा फिल्म्स, 2009।
5. अनुषा रिजवी (निर्देशक). *Peepli Live*. मुंबई: आमिर खान प्रोडक्शंस, 2010।
6. NITI Aayog. *भारत में रोजगार प्रवृत्तियाँ (Employment Trends in India)*। नई दिल्ली।